



## श्यामकेलि

कायस्थ भटनागर श्रीलालागोविन्दसहाय वल्द  
लालागणपतिराय सिकन्दराबाद जिल्ल  
बुलन्दशहर निवासि कृत

जिसमें

सच्चिदानन्द आनन्दकन्द श्री कृष्णचन्द्र जी और  
सर्व सुखखानी श्रीराधिकारानीजी की केलि  
अत्यन्त ललित कवित्तों और भजनों में  
वर्णन की गई है ॥

लखनऊ

पुंशी नवलकिशोर सी, आई, ई के छापेखाने में छपी  
मार्च सन् १८८९ ई०

पहिलीबार ६००

34

इस पुस्तकका हकतसनीफ़महफूज़ है बहकइसछापेखानेके ॥



श्रीगणेशायनमः ॥

## श्यामकेलि ॥

—\*—

दोहा ॥

जयगंगापति शारद जयति मंगलीश बागीश ॥  
श्रीगुरुचरणा सरोजभज नवउँ हरिजननशीश १  
कृष्णभजं कहूं कृष्णगुण कृष्णध्यान सोइज्ञान ॥  
कृष्णश्रवणप्रिय कृष्णमन कृष्णकृष्णप्रियगान २  
स० मथुरा हरि प्रकटे पुनि गोकुल नन्द के आनंद  
कन्द सुहाये । सकल दिबूकस भयउ ब्रजूकस महतयो  
ब्रज वस त्रिदसन पाये ॥ महर यशोमति सखन सुख  
दहरि सखियन संग रसरहस रुचाये । अलखअमानुष  
मानुष बपुधर गोविंद गौअन प्रेडत भाये १ ॥

प्रियावचन सखियनप्रति सोरठा ॥

रसिक शिरोमणिप्रयामप्रेमप्रसतिगतविकृतिछवि ॥  
बिलसतजहँब्रजवाम प्राप्तिनिरखि प्रियविहँसिकहो १  
स० देखो प्रयामकी यह छवि सरीसखी दृग मैने दे  
नैनके बैनन बोलैं । पेचखसे शिरपेच लसै कसी भेंट  
कसे न कसीमिस खोलैं ॥ रसराचे नैन लजोलीसी  
चितवन नेहको तेहादुरै दृगओलैं । आपो सवांरत पर  
न बनतपद कम्पत घूमत भूमत डोलैं ॥ डारत बोली  
निहारत औरंपुकारत औरन औरके भोलैं । कोईहँसे  
कोइ प्रयाम हँसावत प्रयाम सखिनमन बोलन तोलैं ॥



गुंजन पुंजन कुंजन पंकज गुंजतमधु श्रीयमुनाकूलें ।  
प्रेमको भाव जनावत गोविंदप्रियामकूं पावें जो  
प्रियामसी होलैं २ ॥

श्यामवचन प्रियाप्रति ॥

प्रियाम हँसेही यानेहादुरें कहे बानिसखी नईकौन  
पै सीखी । आपनि बात सुनायके औरपै डारत हो  
मानो भोरेसे जीकी ॥ तुमहिं चतुर तुम सुघर शिरो-  
मणि आपेको नीको निहारक नीकी । सौ सौ करो  
न छिपै जानसेचित भाषे फँसोमन हांसीते फीकी ॥  
भोरेसे बैन हसोरीसी गोरी ठगोरेसेनैन बिलोकन  
तीकी । बातन घाते सुहातीसी बातन प्रीतिसनी भनै  
बानी महीकी ॥ सांची कहूं न कहै कौनबावरीमानो  
बुरी भाओ मेरी कहीकी । जैसी कहे पुनि तैसी सुना  
चहै लागी लगनि मन गोविंदहीकी ३ ॥

प्रियावचन श्यामप्रति ॥

कैसे फिरो मनफूलेसे मोहन कोई मिली प्यारी  
काकछु पाओ । रोकत हांसी बिलोकत कुंजन टोकत  
ओरत को मिस लाओ ॥ कहबो चहत पर कहत व-  
नत नाही कैसी बनीकहे यहां लौतो आओ । बानि  
सदाकी मैं जानति गोविंद कैसीहू बात बनाय छि-  
पाओ ४ ॥

श्यामवचन प्रियाप्रति ॥

आई इतैहो कितैकं चलीअली तेरीगली कहां तू  
कितही की । घाटनपानीकोबार इतै कित भूली फिरै



गति मानो ठगीकी ॥ ठाढ़ीभई चली ठाढ़ीसम्हारति  
 प्रयामचितै गति आपने जीकी । रोके बनैनबनै मन  
 रोकेहु जानति रीतिन प्रीति नई की ॥ सोहै बदनअस  
 कनकी मनोछवि चन्द्रतेअमृतबिंद सिखीकी ॥ केशन  
 कुसमलसे सोखसत आली भलीसुरतिखुली बेनीगुही  
 की । प्रेमदुरै मन भरोहमें गिन देत सिखावन आन  
 सखी की ॥ तू जो कहैन कहावै तेरोमन जानै  
 गोबिंदही तेरी चही की ५ ॥

राधा बचन श्यामप्रति ॥

गुप्त मतोतेरो जानै मेरोहीऔ काऊते आसा लभा-  
 सादेकोई । गोपिन गुप्तमें जानूं सबै नवयौवनी लोभनी  
 ओरही होई ॥ तोकं ललाललचाय लुभायकैबातबनाय  
 दुरै गई सोई । कोनके लारहिरो फिरो गोबिंदपाई  
 गई किन खोई सोखोई ६ ॥

श्याम बचन राधाप्रति ॥

ठाढ़ी कहा बतरावतहो इतरात कहांलो छिपे चतु-  
 राई । लाज विवेक मर्यादकी टेकहू आज तोसकहू  
 तोमें नपाई ॥ कोई कहांलो कहैन सहै तेरी जैसी  
 कही तैसी तोमनभाई । मैजो कही सो कही निजप्रीति  
 की मोकं बिनातेरे कोन सुहाई ॥ तूही चहैन चहैप्यारी  
 मोमन तोमें बसो तूही जीमें समाई । धाऊं जहां तेरो  
 ध्यान सबै तजि तोसं निरन्तर प्रीति लगाई ॥ मेरीतो  
 भावना जानै सबै सखी मैं तो सदा राधेराधेही गाई ।  
 प्रेमतेगोबिंद हेतद्वैक्योंन तोकं प्रियावृषभानदुहाई ७ ॥



ललिता आगमन ॥

श्यामवचन धुनिश्यामा ठगे गई आन सखिन तन  
लजित निहारी । आपने मंत्रकीललितासखीसे विसा-  
खा सहित निजनिकट पुकारी ॥ आवतही गई आपेते  
आई पै श्याम चितै पुनि सुरति विसारी । नीरद नील  
सकान्त वपनव नीरज नैनसे नेह अगारी ॥ पीतवसन  
तनदामिनिद्युति घन कुंडल कलक अलक तट न्यारी ।  
गंज लसे तन भूषणा कुसुमन सुवरणा गगन मने घन  
भारी ॥ मंद हसन मन वसन विलोकन भृकुटि कुटिल  
अधरन छवि चारी । होमैं चितैचित चकत निहारत  
नैनन गोविंद रसिक बिहारी ८ ॥

॥ ललिता वचन श्यामप्रति ॥

चाहत राधापै जैवो सखी परकैसे तजै मनश्यामकं  
मानै । आयुस बीचमेंचुम्बक दोजो इतैकूं खिंचैतोउतैकूं  
दुरानै ॥ दुविध जवार्तजि दुन्दुषसेमन तणाजिमिदोउ  
दिशि परवशा भमानै । बियस गवन जल पवन बहन  
वशा तरनी सकै नचलै न धिरानै ॥ श्यामहू ललिताको  
रूप निहारत मोहे सनै पर प्रकट हंसानै । भूली किधैं  
मतिकितहू विसरि आई मनहू न संग लई हगहूगवानै ॥  
श्यामते गई दुहाई बवाकी न भावै हमैं तेरे वचनसिया  
नै । उनते कहो जोसुनैं सहैरस लहैं जैसी कहै जोसो  
चाहै कहानै ॥ हमन कहैनुनै कछुकाहू की काहूको  
सांवल गौरन जानै । तुमहीं नविन गुण सुनियत गोविं-  
दहमहू सो यह गुण आजलखानै ९ ॥



श्याम वचन ललिताप्रति ॥

कहा प्रियाम सखी तुम जानो कहा विनज्ञानिके मान  
हरै मतकैसी । स्वप्नमें रंगमिलै विसरै श्रीमानोको मान  
करोजो सो ऐसी ॥ नारिकेलमें दुग्ध स तंत्र भरे तुच  
पुष्ट अभेद रहेहो सो जैसी । गजमुक्त कर्पित को सत्तन  
से बहर आकृती आवृती होजोसो तैसी ॥ विन पदपन्थ  
विना गिने गुनछिन सम्पति आगमा पाई सुतैसी । तुमरे  
धनो धनहै तो भलै दियो मानपै घोड़श वरसन वैसी ॥  
तुमसो भुजिठयापरेख्या घनी करें नन्दके तुमसो  
सहस सुवरैसी । खिजो अपने गोविन्द भजोतो भलैपर  
प्रियाकी प्रिये सोहमारी प्रियैसी १० ॥

विसाखा वचन श्यामप्रति ॥

गाई विसाखा सुनाय सुहाईसी आपकूं प्रियामजू  
ऐसीनसोहै । बड़े बापके पुत्र कहाये भले नन्दलालजू  
नाम सुहायो भलोहै ॥ नन्दजू साध यशोमति भोरीठगो  
री नविन गुणातुसहीं लियोहै । सखी आपही यशुमति  
कानिकरें करै मान तो जातिमें कौनबडोहै ॥ धेनु महा  
धन गोपनको सोतिहारेकहा जोधनोसो भयोहै । नन्द  
जू वृद्ध प्रधान महानको शील सो जानते मानबडोहै ॥  
साखन चोरी हसोरी लई मुख जोरी बुरोशुणा तोमें  
पडोहै । सातकी सांरी उलूखल दामकूं भूले गोविन्द  
की उन अभयोहै ११ ॥

कृष्ण वचन विसाखा प्रति ॥

तोसी विसाखाकीसाखकहा सखा साखदे शाखापै



शाखा जमावै । हमहींते सीख सुनाय कहै सखीसीखे  
सिखाये नसीख सिखावै ॥ अपनेही मनते बनें सोकहै  
कहुं आन बनेतो कहा बनि आवै । गान करै हमजन  
कन को करै मुनि जन कान कहा तू जनावै ॥ धनकी  
कहै तो धनद मोते धन चाहै निरधन धन मेरोनाम  
कहावै । प्रेमते मोकुं भजै सोठगैमोय मेंही घृनी मोते  
कौन ठगावै ॥ सखियन प्रेमविवश ब्रज बश भयो श्री  
पुर सुख ब्रजकोलि भुलावै । प्रियाते कहौ तजिमान  
मिलो प्यारी राधे गोविन्दही त्रिभुवन गावै १२ ॥

ललिता वचन राधा प्रति ॥

ललिता ललित गति विगति चलितमन चलत  
चितैछवि राधेपै धाई । सुरगुर बिलगीसो ताराचली  
मानो चन्द्रमा दीप्तिवदन तनआई ॥ वासव प्रेडी चली  
मानो उर्वशी आई जहां शची सुराचि सुहाई । विधित  
मना विमना मनहीं मन राधाइतै लज्यानी सी पाई ॥  
सकही प्रयासते नेहा लगौ दुरैसकते एक जनायहिठारै ।  
प्रिया तेकहो वृषभान की कानहू तुमहुं तजोन गहो  
ठकुराई ॥ तुम्हरे सदा नवनिधि बसे श्रीवृद्धि सुधनधन  
धेनु सुहाई । ग्वाल गोविन्द से द्वारे खड़े वृषभानु के  
सांगत धेनु चराई १३ ॥

ललिता पुनर्वचन प्रिया प्रति ॥

वचन प्रपंचन बंची प्रिया नहीं प्रयासके भायेकछू  
दरितेरी । बातन प्रीति जनाय कहै गिनै सखियन  
अपना सुचारीसी चेरी ॥ दासी कहो तो सबैकहो



बावरी तूरही कौन कहा चलै मेरी । मुक्तनमाल मुरन  
 मनभयगा गुंज कुसुम कली अधिक चहेरी ॥ चन्द्रिका  
 रतनजड़ी तुम्हरी उन मोरके पांख लै शीशधरेरी ।  
 तुम्हरे बिचित्र बरन बसननपर काछनी कोवरी चहत  
 बडेरी ॥ साखन घरन हरन दधि गलियन अबन सहै  
 सहेजबलौं सहेरी । ऐसे गोविंदसे प्रीति कहा जामें  
 लाजमर्यादन कानिहै सरी १४ ॥

राधा बचन ललिता प्रति ॥

प्रयामकी ललिता कहै सो कहैं सब हमन अपुन  
 मनहुं यही जानी । यौवनमान गुमान प्रमत्तनहींमानत  
 औरन अपुन समानी ॥ अनल भरन जल भरन दनुज  
 भैते अभयेते हमनिज दासी प्रमानी । चीरहरे तो  
 कृपान करी सखी हिमिन्त अमत् अति लजित खि-  
 जानी ॥ मंत्रितयंत्र मनो मुरली सुनि अघरा सोतन  
 मन लाज बिकानी । बनिता बनन रनिवास प्रवेशन  
 चोर और जार सिखामनमानी ॥ लम्पट जारकी  
 सार कहा मनमानी करै कहै पर प्रियवानी । अबन  
 गोविन्दसों प्रीति करै न प्रवेशदेहारतेवेधनपानी १५ ॥

बिसाखा बचन राधाप्रति ॥

कछुक सकुच बिहँसी मनहींमन प्रियाते बिसा-  
 खा कहा सखीसरी । औगुणी प्रयामभये सो भये सखी  
 तुमहीं सहदयगा कैसेतजेरी ॥ प्रिया गौलोक विहार-  
 नी मोहन तुम प्रिय कर ब्रज रास रचेरी । रासमें संग  
 विलासतेरंगमें लालनलाल गुलाल मलेरी ॥ कोकिला



प्रयासकोलि ।

वैनी सुगानकरै उन सांसुरी धुनि मन बसान करे  
री । प्रिया नितमोहन प्रीति बिबशरही कोउन बचन  
अर्वाकिन सिखसरी ॥ विभुवन गोविन्द बिबश सो  
प्रियावश प्रियाभई मान बिबश न सोहैरी १६ ॥

राधा बचन बिसाखाप्रति ॥

कोन बिसाखा सुने न हरीगुण तुमना चलनचिन  
पुराचिन चीने ॥ रचिप्री नग्र छले श्रीनारद बनिप्री  
बामन बलि छलि लीने ॥ तुन्दा छली अनुसुय्या  
छलन चाही उन हरिहर बिधिहु छलिलीने । मोहनी  
रूप धरे हरीपुनि दानव हरवृक मोहनकीने ॥ प्रिया  
तन प्रिया बनि प्रियन में प्रिया बने बसन बचन  
कति रुचिर प्रवीने । नर नारी बनि हरीनारी नरन  
छलो हमैऊ छलेना सोहमर आधीने ॥ चाहै सो रूप  
धरे करै चाहै सो करत चकत कति चरित नवीने ।  
जेते गोविन्द भजे सो लहेफल दूरही ते करजोरु  
हमीने १७ ॥

सखियनपरस्पर संवाद ॥

सखी हरिपाये मन्दिर माय ॥ अपुन अपुनीसो  
निरखि मरिण खम्भनिजतन छाय । दूसरोशिषुजानि  
माखन देत हम तुम खाय ॥ कहे न कही निज कत  
परस्पर युगल मित्र सुहाय । निरखि सखी हमलखि  
सकुचे तजि भाजै गोविन्द ठाय १८ ॥

इतरगोपी बचन ॥

माखन हरत परघर जाय ॥ गोपी आवत देख



मोहन भवनकोन दुराय । जोहो सन्मुख तो भजै न  
भजै तो देत हँसाय ॥ करगहै कोइ तौ भटक मुख  
मोरतन छिनखाय । कहूं भजतगोविन्द भाजत गोपी  
गति नहीं पाय १९ ॥

इतरगोपी बचन ॥

सखी हरि चरित निरखि सुख पावत ॥ सकदिन  
आन सखीगहै मोहन साखन मन्दि घुरावत । यहांकै  
से आयो कहेकोई बावरी घरबिन जिन तजि धावत ॥  
पटकि न खोले कहे हम हितकर बानर मोर भजा  
वत । छोको हलो कैसे सुखक नाखो गोविन्द कहति  
हँसावत २० ॥

इतरगोपी बचन ॥

भयो नव साखन चोर मुरारी ॥ सुनो मन्दि द्वार  
पट लागे सोहत ऊंची अटारी । ठाढ़ेकरे लड्डिकन पर  
लड्डिका काधैन गैल निकारी ॥ लै दधि साखनखाय  
खवायो सुनि सखी भवन पधारी । गोविन्द सकुच  
भाजि दधि मुख भर सखी मुख नैननमारी २१ ॥

पुनरगोपी बचन ॥

साखन हरत करत चतुराई ॥ कहे निज मन्दि  
निरखि सखि समघर तू क्यों आयो कन्हारै । कहे  
हूं तोइ पुकारन आयो यशुमति मात बुलारै ॥ मांटु  
खुलो कैसे कापन उधारो कर कैसे डारो पपीलक  
पारै । दधिमुख कैसेलगा करपरसे गोविंद गोपी  
हँसारै २२ ॥



पुनर गोपी वचन ॥

मोहन करत सखिन प्रति खोरी । सक सखी दधि  
चोरत मोहन लेचली यशुमतिपोरी ॥ सखी सुत सैनन  
बोल दियो कर सखी करकीन ठगोरी । घुंघरते हरो  
करन पडो लखि सखी सुत करचली भगडत वेारी ॥  
गोविंदआज गहो दधि चोरति निरखि महर हंसि  
करत ठगोरी २३ ॥

इतर गोपी वचन ॥

मोहन साखन हरत खिभावै । बातन घात लखे  
लखि इत उत साखन लै भजि जावै ॥ ततछिन खाय  
पकड़नसकेसखी पकड़त कपन खवावै । छीकेसथानी  
निरखि मुरली कर छेदत दधि मुख लावै ॥ खीभ  
दै गारी सखी हंसि गोविन्द तारी दै रीभत वेारी  
कहावै २४ ॥

इतर गोपी वचन ॥

सखी हरि निरखि विहारन मोहै । गारी गिनै न  
मानै दधि चोर न मन हरि दर्शन लोहै ॥ काज तजै  
घर साज बिसारै दधि मिस गलियन जोहै । जोड़ धरै  
दधि साखन हित करि कब हरि चोरत मोहै ॥ सखि  
यन प्रेम विवश नित गोविंद घरघर गौधन दोहै २५ ॥

इतर गोपीवचन ॥

मोहत हरि मुखबेनुधरे । मेघवरनतन अधर अरुन  
घन कुण्डल करन खरे ॥ नीरद नील दुती शुचि इत  
उत वरन वरन बदरे । मुकुट जटित छवि अरुन छिपत



रवि बंशी मनो नभ धनुष परे ॥ कोयल कोकिल  
बानिन गोविंद सुरली धुनिन मन मुनिन हरे २६ ॥

इतर गोपी बचन ॥

कहूं बाजत बेनु मधुर धुनरी । अनिल चलित ना  
हलत जल अचलित सकल चराचर तू सुनरी ॥ बाजत  
नभ सुरबाद उतैइत सुरली मनोहर कुनकुनरी । पैजनी  
धुनि मृदगान पडतसुनि निरतत गोपी नविन सुनरी ॥  
चलत अचल चल अचलित मोहत सुरली गोविन्दमन  
ऋषि सुनरी २७ ॥

इतरगोपी बचन ॥

सबो सुरली मधुर धुन फेर बजी ॥ टेक ॥ सहिचर  
जलचर नभचर मोहत यमुन अपुन गति गमन तजी ॥  
श्याम सुहावन करधर सुरली सुघर मृदु अधर सजी ॥  
सखियन लाज हरी मिल गोविंद मुख लग बोलनी  
सो न लजी २८ ॥

सखीबचन ॥

गावत गोपी गोपाल गुना ॥ टेक ॥ भोरो सो मुख  
रसवरसत नैनन सैनन बैन सुघड ललना । रुचिर बचन  
मन बसन हसन छवि दशन दमक उडुगान गगना ॥  
मोय चितैचित चोरगयो कित मतिविसरी भई विगत  
मना । गोविन्द बनवन डोलूं अकेली सो हेली तजो  
हम घर अंगना २९ ॥

इतर गोपी बचन ॥

श्याम के मैं कौन कौन गुण गाऊं ॥ टेक ॥ रूप



अतोत अमोलक डोलन बोलन पै बलि जाऊं । नासा  
कीर सु भासा शुक्र पिक दुग कवि मृगन लजाऊं ॥  
चन्द्र वदन मुख सदन सदन कवि हरि वपु सम नहीं  
पाऊं । शोभा सागर रूप उजागर नित गोविन्दकवि  
धाऊं ३० ॥ इतर गोपी बचन ॥

प्रयास गुण गावत गोपी हंसाई ॥ टेक ॥ हृंदधिले  
घरसे निकसी जब प्रयास कहूं लखि पाई । औचक  
भटपट घंघट भटको दधिमटकी छलकाई ॥ सो दधि  
बिन्दु लसे हरि मुखपर नभतारन कवि छाई । विहँसि  
गोविन्द मुखमोर भजोपुनि सो कविहियेमें समाई ३१ ॥

सखी बचन ॥

सखी हरिकवि लोनमुलावे ॥ टेक ॥ कबहुं ललित  
कवि लालनकी लखि आनंद उर न समावे । हरीहरी  
भजत हरी हर मुख पर मोहनही मन भावे ॥ कबहुं  
पकारकहै कहां मोहन लोचन जलभर लावे । मुखहिमें  
भौंरि फिरे सति खोईसी गोविन्द गोविन्द गावे ३२ ॥

सखीबचन ॥

सुनेरी मैंने प्रयास सुहावन बोल ॥ टेक ॥ रघालन  
संग तजो मोय चितवत आयो इतै उत डोल । विहँसि  
कहे मुखदर्शन है दुक निज घंघट पटखोल ॥ लजित  
चलत मतमोर विगतभई तनकम्पति अनतोत । विगत  
अकेली भजी तजि गोविंद तू कित करत ठोत ३३ ॥

सखीबचन ॥

कहत सखी सुं सखीसुन सरी ॥ टेक ॥ मैं यमुना जल



भरनचलीमग खालन संग मोय सामल घेरी । गागर  
डगरपटक पट भटको में भटसुरली भटक मगहेरी ॥  
दूजीसखी लै भजी कहं बांसुरी मोहीं ते श्याम निपट  
अटकेरी । पुनिहुं गोविंद संग भाजी सखी तन जोमें  
दुरीसो गलिन भटकेरी ३४ ॥

दूसरी सखीबचन ॥

आइ सखी सक प्रयाम पुकारत ॥ टेक ॥ होनन्द-  
लाल गुपाल कहांतुम बेगचलो प्यारी बात निहारत ।  
भोरही नेक दरश दे दुरेकित काहेको काहु के मन  
की विचारत ॥ राधा न साधो रते बिन मानस जानत  
हरि परनहीं पन पारत । गोविन्द बेग प्रिया चल  
मिलिये सो विरहानलते वृथा तन जोरत ३५ ॥

ललिता बचन बिसाखा प्रति श्यामा नवरस बिहार ॥

बिलसत हरिते बसत गौलोक में जोसो प्रिया वृष  
भान दुलारी । प्रयाम के संग सदा रसरस में नव रस  
रास बिलास बिहारी ॥ मरकत रतन सुरन मणि भू-  
यण सु बसन करनित नवनशिंगारी । हासमें बांसुरी  
औचक चोर के भोरीसो खोज बिभाये सुरारी ॥  
श्याम दुरेतो फिरीभ्रमरीभई करनाप्रसो जो वृहानल  
जारी । रुद्रताप्रीतिके बिघ्न पैवीरता श्यामपै निशिमें  
बिपिन चलधारी ॥ कबहुं कियरुजन भयते डरीकरी  
कबहुं गिलानी हया पुनितारी । बंच गोविंद बिधि  
बंचक अद्भुत शान्त बसे हरिहिय प्रिया प्यारी ३६ ॥



कृष्ण नवरत्न बिहार ॥

प्रिया को शिगारी हरी निज प्रिय कर प्रिया  
प्रियकर हरी अपुन शिगारे । हासमें दान लियो दधि  
को हरी प्रिया तन छटुम त्रिया बनधारे ॥ भयजोकरी  
तो प्रिया ते करी निज पर त्रिया रुचि प्रिया ज्ञात  
बिचारे । प्रियाकरो मानतो दीनमनाहरी करनाबचन  
मन द्रवन उचारे ॥ सुदृता घोर घनन जलदारनवीरता  
करगिरिभार सँभारे ॥ गोपन ग्रास वीभत्सलहे मुख  
सखिन प्रचरजा प्रचार प्रचारे ॥ प्रिया निजबंचक  
बंची सोअद्भुत सुखहि में विभुवन जननि निहारे ॥ प्रिया  
हरि चित में बसत सोप्रिया चित बसत सो गोविन्द  
शान्त प्रकारे ३७ ॥

ललिता बचन विसाखाप्रति ॥

सरी विसाखा हरिनभलो ॥ गैल गली सखीपुंजनपनि-  
घटकबहुं न सुधो चलो । छेड़ै खिभावै रिभाय मना-  
वतरुचिर बचन चपलो ॥ गाहक रसको भ्रमत नित इत  
उत भोरिन जाय छलो । सामरो तन जैसे कारो लखौ  
मन कपटिन में अगलो ॥ कारे बुरे सो अलीरस लम्पट  
लिपटो जो कमल खिलो । कारी घटा निशि कारी  
कोयल धुनि विरहिन गात जलो ॥ कारो प्रपंचीहियो  
सो दयाबिन स्वारथ लीन डुलो । गोविन्द प्रियाम सबै  
विधि कारो न तन मन बचन उजलो ३८ ॥

विसाखा बचन ललिता प्रति ॥

प्यारीहो कारे सब ना बुरे ॥ टेक ॥ कस्तूरी कारेजग



नीको कारे प्रिय बंदरे । कारे केश युवा सुख बोधत  
 कारेकुसुमखर ॥ कारेकमल प्रयाम छवि दरशात कारे  
 शंभुगरे । कारे मोर पंख सुख चंदवा सो हरि शीश  
 धरे ॥ प्रयाम तमाल नील मणि सुन्दर सुन्दर गंज शिरे ।  
 गोविन्द प्रयामशिरोमणि सुन्दर जिनजगतापहरे ३६ ॥

प्रिया बचन प्रयाम तस्करता ॥

वृन्दा को ब्रत हरे हरि आपही बल हूँ के अपुन  
 प्रभावछुपाये । आपने रूपदुरेबने मोहनीदनु जनमतिहरी  
 अमृतदुराये ॥ भ्रमकागभुशुंडगरुडको हरे हरे गिरिजा  
 जनकजाको रूपबनाये । यमदग्धितनयतनतेजहरे पुनि  
 ताने धनुरगतवेग नशाये ॥ ऋषि यज्ञमें राक्षस  
 भीति हरी हरी केकयी मतिसिया हरन कराये ॥ हरे  
 देवकी आनकदुन्दुभीबंदिसे । नन्दके आये दुरायपठाये ॥  
 कन्दुक वैडू निशान सखन सखी साखन भूषण बसन  
 चुराये ॥ मान अपमान हरे दनु देवन पुनि कंदूष को  
 दर्प दुराये ॥ जन पापनपुंज लखो सो हरे भव भीर  
 हरेया सदासे कहाये । अबहुं गोविन्द रसिक व-  
 र छविधर सखियन चितविते हरि बेकूं आये ४० ॥

प्रयाम गवन सखान संग ॥

प्रयाम सबै सुन सैनन बैनन बिहंसि चहे कहूँ  
 बचन उचारै । ग्वाल सँघाती बयस महा वेगते आये  
 पुकारत मात पुकारै ॥ बांहगहै कोइ खँचै बसनकोइ  
 रहसपकड़ तन गुलचनमारै । दूरते आयसुनाय कहै कोइ  
 माता हरी तोकूं साटी समारै ॥ बरबस कान तजीसुख



श्यामकोल ।

संगति ठिठकि चलत मुख मोर निहारै । कान लगे  
सखी बानी सुहावन बिन मन ग्वालन संग पगधारै ॥  
ग्वाल कहै यह न सोहत लरिकन अबहीं सखिन संग  
चहत बिहारै । मायते जाय कहैं सब गोविंद हम हैं  
तो इन तेरी बान न टारै ४१ ॥

श्याम प्रदर्शन यशोदा प्रेम वर्णन ॥

मात इतै हरि बाट विलोक्त दूरते आये निरखिहर-  
यानी ॥ वत्सलखे जैसे धेनु प्रफुलित लोचन लोचनलाभ  
लुभानी । अर्थी सलाभ लहै मणिफणिपति रंकमिलै  
जैसे रतननखानी ॥ दूरही ते उरलाय कृपाकर शीश  
धरोहरिमस्तक घिरानी । खेलन दूरिकितै गयो मोहन  
बिल्मदुसै छिनबर्ष बिहानी ॥ तोकूं लखूं तो मैं पाऊं  
सबैसुखतेरेदरशाबिन सर्वसहानी । दूरखेलनपुनि जाओ  
न गोविंद अबना मानो तो कहा भली जानी ४२ ॥

ग्वालबचन यशोदा प्रति ॥

ग्वाल सुनायकहै हरिऔगुन यशुमतिश्यामहू लीन  
कुचाली । ग्वालिन गैलमिलै तो लगै संग हमसुं बिलग  
लहै पन्थ निराली ॥ बोले बिना बुरोबोलै बुरोसुन गा-  
लिन रारबढावै दे ताली । कानकरैं तोसुं कहन सकैं  
सखी शोच सकुच सुन देत न गाली ॥ शिर दधिगागर  
गोपी चलीं मग कांकरी औचक दै मही डाली । हट  
को जो मैं तो हटोनाकरी हट भटक पटक सो नटो  
ततकाली ॥ गोपी भूपट सो लकुट पटछीन के  
मुकुट कोहाथ करोमैं सँभाली । शरकठिन तै मिटी



सो मैयाजू गोविन्दै सँभालो रहत न यह ठाली ४३ ॥

श्याम बचन यशोदा प्रति ॥

माता न मोते बनेो जो कहेो इन यह नामाने बिन  
बात बनाये । नट खट भारी कुटिल महालम्पट गोप  
सुतन छलछंद सिखाये ॥ खोटीकहै कहूं काहूतेकाहू  
को चोपदेगवालन रार कराये । गोपी भवन लखसूने  
लै लरिकन चोरी करी दधि माखन खाये ॥ कहं सुन  
धाई सखी तो पकड़ कर मुष्ट हने पगपानि बँधाये ।  
मैंजोहतो तो मैंपक्ष करी पुनि दुरगति गोप करतसो  
बचाये ॥ बिनती करी करजोर कहेो इनतेरो भयो  
सो मैंबिन्द हुड़ाये । अब मोतेबैरकरैकहैगोविंद समभूं  
तुहैं सो यहबचन सुनाये ४४ ॥

ग्वाल बचन यशुमति प्रति ॥

ग्वाल कहेो मैं यह सांचीकहूंबनीबातकहै सो महा  
लघु मानो । मैंजोगयो तो यही लै गयो गयो मैंही तो  
यह कहेो केहिबिधि जानो ॥ मोकूं लै आपही चोरी  
करी सोलै माखन भाजो सखी कूं लेआनेो । दधि मैं  
नखायो लगायो सो मोहीं कूं आप लैभाजो सो खाय  
छिपानो ॥ औचक आयगहो सखी मोही कूं मोतेबनी  
लख प्रयाम हँसानो । कोमल ताड़न करन चहो सखी  
इनहीं तो सीखदै कठिन करानो ॥ मैंतो भरोसो करो  
निज पक्षको बैर कहेो इनकह गुन ठानो । यशुमति  
भरो सो भायत गोविंद विष को भरोसो सहारिस  
खानो ४५ ॥



श्याम वचन ग्वाल प्रति ॥

प्रयाम कहो मैं सदा रस बिलसत त्रिष भरो तूही स-  
हारि स पागो । तूही नयो सतवादी भयो मानो कुलको  
कलंक मिटोय शजागो ॥ औ गुनी तो सो तूही ब्रजमें भयो  
निपट निलज सदमारग त्यागो । माता हमारी ही भारी  
मिली सोतु बचन बनाय सुनावन लागो ॥ गोल गली बन  
कुंज अकेली मिलोतु तो देखूं कहां लग भागो । अंग अंग  
तोड़ूं मरोड़ूं भुजा तेरी छीन विशान लकुट पटपागो ॥ मोकूं  
न तोते बने पुनि खेलन गौको बन करहू विभागो । जो तू  
कहे तेरो दास मैं गोबिंद तो न तजूं मेरे द्वेष न रागो ४६ ॥

यशोदा वचन श्याम प्रति ॥

माता कहो तेरे औ गुन मोहन सुनत मैं हारी  
कहां लों बखान । ग्वालिनी तेरो ही चरचा करें अब  
ग्वाल वचन क्यों मैं सांचे न जानू ॥ चोरी लई जो ते निल  
सखियन कर सुनत उलाहन मन दुखयानू । आपनो  
बावरो देखै दुखी मन और को वारो लखूं तो हसानू ॥  
मेरो तो सक तूही तृणा तोड़ो सो तेरे चवावही सुन  
अकुलानू । पर घर चोरी तजै तू तो ग्वालन माखन  
तेरे ही हाथ लुटानू ॥ जो सदलोनी रुचै तो मैं निज  
कर जैसे कहै दधिन्यारो मथानू । अबना मानै तो  
मैं रिसकर गोबिंद सांटीके बल तेरी बानि छुड़ानू ४७ ॥

श्याम वचन यशोदा प्रति ॥

प्रयाम कहो मेरी बानि सदा तुम जानत मात सो कैसे  
भुलानी । भारही घरते लै ग्वालन संग बन धेनु लै धाऊं



सो आऊंसँभानी ॥ धेनुदुहनधन बांधन खोलन कृत  
 करुं नित सांभ मुरानी । तेरो दियो मेरो माखनको  
 घट न्यारो धरो भरो दधिकी मथानी ॥ मोकं न लेश  
 अवकाश मिलै कब कौनकीक्यों धरी वस्तु चुरानी ।  
 गैलनग्वालिनीघेरनचावतवन बनग्वालनधेनु घिरानी ॥  
 मानो न मैतो कहेमिलतोही सं जानो प्रपंचना मोते  
 रिसानी । प्यारो बबाजूकहै मेरोगोविंद उनपै रहूँतेरी  
 मानुं न बानी ४८ ॥

यशोदावचन कृष्ण प्रति ॥

यशोदा कहुक सुत खोजोलखोमुखभीजोसप्रेमठरे  
 दुग आंसुं । प्यारो हरी मोकं प्राननते मन राखुं सदा  
 मुख निरखहुलासुं ॥ तूमम जीवनजीवतुही बिनतेरेन  
 जीवनछिन अबलासुं । मनकीलखुं तेरे मुख दुग बैनते  
 मानुं मैचित्त सकोच बिकासुं ॥ उमगोहियेउरलाय ले  
 आंचर हरि मुख पूछो विसारो प्रियासुं । तोकं जोपै  
 धौरी धेनुप्रिये ततसीरोसो मिसरी लै पाओ सुहासुं ॥  
 भाषीसरोषी सखा सखी प्रयाम कं दीनगिना सो कहा  
 मनभासुं । त्रिभुवन सत्पति मेरे गोविन्द सो उनके कहा  
 करें पटतरिकासुं ४९ ॥

यशोदा पुनर्वचन ॥

जाओरे ग्वालन आवें ग्वालिनी प्रयामकी नितनई  
 आय लगावैं । भोरोसो बाल खिभावैं न ग्वालन चोरे  
 नमाखन अनरितगावैं ॥ सबही के सुत प्रिय सबहीकूं  
 निज सुत और हू के सुत अपने से भावैं । मोहन हो कूं



विमन करै क्यों मिल मेरो सो लाल कहा कहांपावैं ॥  
 मेकूंतो प्यारो कुप्यारो उन्हें निज हेत जो प्रियाम कूं  
 नाच नचावैं । हूं ब्रजवासिनजानत निज कर और हो  
 अपने परायो जनावैं ॥ तोकूं कहा ब्रजजनते पड़ी  
 दधि मेरेही तेलै भले घरधावैं । तेरी सों गोविन्दमानू  
 नएकहु कोइ भले लखि बानी बनावैं ५० ॥

यशोदा पुनर्बचन कृष्णप्रति ॥

लाल जू वेगचलो घरकूं मुख बिलमते भूख लगत  
 कुम्हलाओ । तूकितडोलतखेलप्रसतइत बोलतरोहिणी  
 पाक बनाओ ॥ चलतुमैंबलकूं बुलाऊं युगलमिलअमल  
 रसालन भावै सो पाओ । तेरो पुकार कहा बलराम  
 होप्रियाम हू बाट बिलोक्त आओ ॥ बिलसत बलजू  
 रहस कृतदूतन सखन मैं माता बचन सुन पाओ ।  
 भ्रात की प्रीति मैं त्यागी रुची कृतिदेर मिले सो दरश  
 उत्साओ ॥ जीते सखा सो लियोनिज पगा पुनि दीना  
 सो हारे अपुन धन दाओ । जीतगिनी जो सुने घर  
 गोविंद हारे जो हर बिन कालविहाओ ५१ ॥

श्याम भोजनकृत ॥

बलजू इतै इतप्रियामलला मिलबिहँसिपरस्पर मोद  
 बढ़ावैं । यशुदा लै धाई भवनसो युगल छवि निरखत  
 रोहिणी आनन्द पावैं ॥ अजर शुची सो महा रुचि  
 शोभित अहा अटालिकउन्नति भावैं । मोतिन भालर  
 पटिल अभरन परियंकसुख आसन दिव्य सुहावैं ॥  
 साखन मिथीले दूध सुरुचि शुचि भोजन भक्षले अधि-



क रुचावें । मणिनखँचित रज सुरनरचित कर पावन  
भारी ले पात्रि नपावें ॥ सुन्दरनन्द भवनमणि कंचन  
जटित फटिकमणिखम्भ सुहावें । बिलसत रहसयुगल  
मिल गोविंद परसत मातबिलोक सिहावें ५२ ॥

सखीवचन सखीसे ॥

सोहत अजिर हलधर प्रयाम ॥ टेक ॥ ग्वाल बालन  
बाल सुनलिये धाये तजि निज धाम । कोई सखा घन  
प्रयाम टेरे कोई कहै बलराम ॥ मोर बानर भ्रमत इत  
उत प्रयाम शीत सकाम । कोर डारत रहस गोविंद  
निरखि मुद ब्रज बाम ५३ ॥

सखीवचन सखीसे ॥

बिलसत युगल बल गोपाल ॥ टेक ॥ मधुर बलमधु  
पर्क प्रिय कर देत लेउ नंदलाल । रुचिर साखन  
सिता मिश्रित देत प्रयाम रसाल ॥ विविध व्यंजन देत  
मोहन पावें रुचिरुचिगवाल । मुदितजनमुदमातगोविंद  
मुदित बल मुद बाल ५४ ॥

सखीवचन सखीसे ॥

राजत प्रयाम सुंदर रूप ॥ प्रयाम तन पित वसन  
सोहत रूप यौवन जूप । मुकुट शिर कुण्डल अवगा  
गलमालत्रिभुवन भूप ॥ केवडे कस्तूरिकेसरदिव्यगंध  
अनूप । सुरुचि लाय खवाय गोविंदसुरसपायसूप ५५ ॥

सखीवचन सखी से ॥

राचतप्रयामग्वालनखेल ॥ टेक ॥ भोजन उत्तर कर  
परवारत करतकेल कुलेल । छुवन दें नहीं छुवन भाजत



जैसे बत्स अलेल ॥ कोई भूपट गिरि उठत भाजत देत  
कोई धकेल । युगल मिल गलबाहँ गोविंद फिरत से  
निज मेल ५६ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

खेलत सखन प्रियामसिहाय ॥ टेक ॥ कोईसखा दृग  
बाल भीचत कोईगवाल दुराय । भजत जोइ सोइ चोर  
डरहुं जो सखा न छुआय ॥ नृपति सोइजो प्रथम परसै  
धेनु धूमर धाय । कबहुं गोविंद गेंदमारत कोई लपक  
लै जाय ५७ ॥

गवालबचन प्रियामप्रति ॥

टेरत गवाल हो गोपाल ॥ टेक ॥ हमों तुम खेलन  
चलै बन यमुन तट ब्रजवाल । अपनी अपनी गेंद लक-  
टन लैचलै सब गवाल ॥ प्रथम चलपावै पकेफल कन्द  
सूल रसाल । खेलै पुनि गोविन्द बनबन हँसचले नँद-  
लाल ५८ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

गवालन संग श्रीभगवान ॥ टेक ॥ हरष युत बाहर  
पधारे पाये नन्द महान । प्रेमकर उर लै बिठारे कीन  
मस्तक धिरान ॥ भ्रात प्रिय निजमात बल्लभ कौनतुम  
बिन आन । नन्द आनँद कन्द गोविंद मेर जीवन  
प्राण ५९ ॥

नन्द पुनर्बचन ॥

मोहन मेर आनँद कन्द ॥ टेक ॥ तोबिना छिन  
बर्यबीतैकहत बाबानन्द । बरष दर्शनमुख निमियड्यो



२४

श्यामकेलि ।

विगत शुभ कृति वृन्द ॥ तुही मम सर्वस्व मोहन तुही  
सर्व आनन्द । मोरमन रजनी शरद गोविन्द तो मुख  
चन्द ६० ॥ नन्द पुनर्बचन ॥

भायत नन्द नेह विचार ॥ टेक ॥ मोरदे दर्शन गयो  
सुत आयो अवककवार । महर खेलनते बुलायो पायो  
भोग अवार ॥ आज नहीं गौवन सँभारो लै गये बन  
ग्वार । तोबिना गोविन्द गोधन धाये बाटनिहार ६१ ॥

कृष्ण बचन नन्द प्रति ॥

बाबाहं नहीं दूरगयो ॥ टेक ॥ मोरही आज ग्वाल  
मोहिं तेरो मैंहुं बोल दयो । भाजत फेर मोहिं नहीं  
पायो सो कहूँ लोप भयो ॥ पुनिमोकुं सखीन लखि  
लीनो अपनो दावँलये । गोविंद आज भाज कहाजैहा  
कालही दधि चुरयो ६२ ॥

नन्द बचन श्याम प्रति ॥

गोधन तोय देखि सिहाइ ॥ टेक ॥ धौरी धूमरि  
कारी कजरी तेरे हाथ दुहाइ । सासरी लाखो ललोही  
इतर लखि लतियांइ ॥ सुन्दरी श्यामा कसेरी तोरहेत  
रँभाइ । नैन कान पसार गोविंद लखे चहुँदिशिगाइ ६३ ॥

पुनर नन्द बचन श्याम प्रति ॥

डोलत ग्वालदै तोयबोल ॥ टेक ॥ लगत नहीं मोहन  
बिना मन फिरत डामाडोल । आय कोइ लखजायइत  
उत कहत नहीं मन खोल ॥ पूछै कोइ हुँहे पुकारे चहत  
यमुन किलोल । कहत कोइ गोविन्द कितगयो जासु  
बैन अमोल ६४ ॥



कृष्ण वचन नन्द प्रति ॥

बाबा नहीं गहन बन धाऊं ॥ हूँ खेलन दूर जाऊं  
जाऊं तो फिर आऊं । मधुर फल परिपक्व उन्नत  
बिटप चढ़ि नहीं खाऊं ॥ इतर ग्वालन मूढसम गऊ  
पूछ गहन भजाऊं । ग्वाल कहैं गोविंद चालोतुमर  
आयसुपाऊं ६५ ॥

गोप वचन नन्द प्रति ॥

चरचत गोप वृद्धि प्रधान ॥ टेक ॥ नन्द जू नन्दन  
तिहारो चिरजियो भगवान । चतुरतर सुन्दर जतावर  
रूप निधिगुणा खान ॥ बचनप्रिय लोचन मनेाहर मधुर  
मृदु मुसकान । ग्वाल गोपो गोप गऊ गोविंद जीवन  
प्राण ६६ ॥

इतर गोपवचन प्रति ॥

सामल सकल मिल हुलसात ॥ वृद्धि जन मिस देन  
सिखवन मुदत मन बतरात । कृत निमत बोलत पुका-  
रत नर तरुणा हरयात ॥ गालिन धन ब्रजबाल खेलत  
नैन बैन सिहात । नितनविन गोविंद चरित न सिखन  
चित्त सिरात ६७ ॥

अथ गोप वचन ॥

खेलत युगल बल घनश्याम ॥ टेक ॥ इत हरी पू-  
थप बने उत यूथ पति बलराम । गेंद मार प्रहार फूलन  
दोउ करत संग्राम ॥ जय पराजय चहत भाजत गिनत  
छांह न घाम । जीत पुनि गोविन्द हरयत धरत नृप  
निज नाम ६८ ॥



इतर गोपबचन ॥

सामल सुधर वरगुण खान ॥ टेक ॥ गावैसनमोहन  
अधर धरबांसुरी सुरतान । धेनु मिलबिहुरैभजैसोउटाइ  
पूछ और कान ॥ तजत कृत गोपीघरनतजि भजतनशि  
कुल कान । धुनित धुनि कुनकुनत गोविंद मधुर सुर  
धुनि गान ६६ ॥

सखी बचन सखियन प्रति ॥

प्रयाम लटयमुनचरावत गायें ॥ टेक ॥ धेनुचरतहरि  
ग्वालनविहरत जब तब सुरतकरायें । होराहोरकदम  
चहि देखत बन बीधिन बिलगायें ॥ पन्थ कपट कोइ  
भपट पुकारत सुनगौ कान लगायें । गोविंद नाम ले  
मुरली बजावत चहुंदिशिते धिर आयें ७० ॥

सखीबचन सखीसे ॥

प्रयाम घर धेनु ले बनते आवें ॥ शीश मुकुट कटि  
पित पट सोहै बसनपवन फोरावें । अलकन पलकन  
कचरजराजत अमकन मुख दरशावें ॥ आगे पाछेवाम  
दहन गौ बीचमें प्रयाम सुहावें । गोविंद खाल धेनु ले  
आवें गावें बजावें रिभावें ७१ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

प्रयाम छवि निरखें सकल ब्रजनारी ॥ टेक ॥ गौल  
गलीदरीद्वारदुवारिन छाईहैअटाअटारी । देखेंदिखावें  
सिहावें कुसुमदल वरयावेंन्यारीन्यारी ॥ आनन्द कर  
कोईउरन समावत गावत संगल चारी । गोविंद रूप  
अपारनिहारत सबहिन गति सतवारी ७२ ॥



सखीबचन सखीसे ॥

आवत प्रयाम मोद ब्रजमाचो ॥ टेक ॥ ग्वालनविन  
धुनि गावें बजावें सकतेएक अधिक रस राचो । इत  
ब्रजनारि पुकार सहचारिन हरिगुन गान मधुर सुर  
वाचो ॥ धेनु बत्स इत बत्स धेनुहित रभावत मानोमिल  
वन जाचो । गोविंद सुरली सुरन मिलि तुमुलित शब्द  
भयो जानो संगल नाचो ७३ ॥

सखीबचन सखीसे ॥

कहतसखीसों उमग भरी धाई ॥ टेक ॥ प्रयामचहै  
तो मिलाहूं मैं चल मिल ग्वालन संगजहां धूममचाई ।  
सिरंग सारंगी मृदंग तमूरे मँजोरे मधुरसुरसुरली सुहा-  
ई ॥ अंगुरिन चुरकी बजै करतालन गावत औरकोइ  
तान बताई । चंग मुंहचंग बजै कोइ निरतत गोविंद  
गति हूं अबी लखिआई ७४ ॥

सखीबचनसखीसे ॥

याही गली सखी प्रयामविलोक्त ॥ टेक ॥ सो नि-  
त राधा सखिन संग बिलसत बार कुवारन हम नहीं  
टोक्त । प्रयाम रसिकसे नबिन रस गाहक प्रयासा न  
क्यों लैसखिन संग रोक्त ॥ सकसी प्रीति अनेकत  
सों फिर सकहीक्यों निज हियरा फफोक्त । प्रेमजहां  
सा बसैतहांगोविंद तूनिज प्रीतिनक्योंमनघोक्त ७५ ॥

सखी बचन प्रियाप्रति ॥

सक सखी हँसि बोली प्रियाहमअचरजसक अना-  
खो निहारो । ठाढ़ी सखी इत गैल छिपी उत प्रयाम



बराय दुरै कर डारो ॥ करमें लेकर दोउ ठाढ़े हंसत  
कोई गोपी निहार सखी कोपुकारो । सोलज भाजी  
कहे खिज गोबिंद कौनसखी कहाँ गाँव तिहारो ७६ ॥

सखी बचन प्रिया प्रति ॥

सरी प्रिया हम एक सखी गत भोर ही भवन ते  
ठठत निहारी । निरखि मुकर खिज पोछै कपोलन  
हरिमुख चरवित पान अरुनारी ॥ बरयो कुरस कज-  
रारे दृगन जल कारी बिचित्र सँवारत सारी । कंचुकी  
रंचक चलित प्रमीडित टूटी तनी खुली लटन सँवारी ॥  
चूरीचरक पटकोर तड़करही नीमी सरकसो दुरावत  
प्यारी । तोड़तअंग सरोड़त भृकुटिन जागी प्रवस निशि  
रहस बिसारी ॥ बसन सुहात नभावत भूषणा सखियन  
सँगअनखावत नियारी । सो जो तो हटी हटे कहूं  
गोबिंद देख दिशा दै हँसी हम तारी ७७ ॥

ललिता बचन राधा प्रति ॥

राधा कित सति भोई तेरी ॥ टेक ॥ अपनेसो मन  
गिनत हरी को जानत बश अपनेरी । तू निज प्रीति  
समुझ मन उसहत उन प्रिय कर नहीं हेरी ॥ गोपी  
अनेकन एक हरी उन प्रीति जनाय ठगोरी । तुमहीं  
चतुरतो चतुर तर गोबिंद नहीं मन भाव लखेरी ७८ ॥

बिसाखा बचन राधा प्रति ॥

नन्दलाला मुरली वाला री ॥ नैन बिशाला बैन  
रसाला मैनमनोहर बालारी । रूपनबीलो भूपछबीलो  
चलत ललित सतबालारी ॥ कटि पितशाला गल युल-



माला कानन लूलू लाला री । गलिन मिलो जब ते  
अलि गोविंद नहीं मन जात सँभालारी ७६ ॥

सखी बचन सखी से ॥

गहले प्रयाम मुरलिया अपनी ॥ टेक ॥ त्रिभुवन  
भावनी मोहनी गावनी सुरनर मुनि मनवसनी । प्रिया  
मन रसनी त्रियन सपतनी मोहन प्रीति अकसनी ॥  
अति बडभागी हरिमुख लागी सुर धुन कर जिया  
नसनी । तप अनुरागी वन रुचि पागी अधर सुधारस  
चसनी ॥ हाहा करूं दोऊ कर जोड़ूं सहन विरह नहीं  
सखनी । हृदो मेरो भीड़त पीड़त नागिन जिमि तन  
डसनी ॥ यह सुख हरनी बेकल करनी निशि दिन  
हीये कसकनी । संवनवांधी सुरसर सांधी गोविंद प्रेम  
सुरसनी ८० ॥ सखी बचन सखी से ॥

होरी साचत राचत रंग ॥ टेक ॥ हरधितश्रंगउमंग  
भरे मन रंग सखा लीये संग । मृगमद अगारमलै गिरि  
केसर घोर बसन बेरे श्रंग ॥ घुमड गुलाल सुरंगनिशा  
छाई उडुगगा अधीर फुलंग । तडित बसन दुति नीरद  
बपु छवि लाजत कोटि अनंग ॥ मुरली मधुरधुन भेरि  
भांभ डफ घुरत मृदंग उपंग । प्रेमते गावत खाल प्रयाम  
गुण छिनछिन बहत उमंग ॥ इत सखियन ले प्रिया  
उठधाई बाजत चंग मुंहचंग । गोविंद प्रेम विवश प्रिया  
बिलसत धनधन ब्रज रसरंग ८१ ॥

कृष्ण बचन सखी प्रति ॥

सखीरी तेरो मोहत अधिक शिंंगार ॥ टेक ॥ कुंडल



करन अरुन अधरन छवि नैनन बान प्रहार । केशन  
कुसुम भाल शुचि केसर नकवेसर गलहार ॥ तौ नव  
यौवन मोमन लोभन वचन मनोहरगार । शशिवदनी  
धन प्रेमसनी मनगोविंद ओर निहार ८२ ॥

सखी बचन दूसरी सखी प्रति ॥

॥ बिहारी मोसंगैलन ठानत रार ॥ टेक ॥ सुनियेरी  
मेरी हेली सहेली घेरी अकेली विचार । हूं अजहूं देहर  
नहीं नाखी आजहि आई अवार ॥ श्याम सुनावत  
बानीसयानी छेड़त बोली डार । गोविंद गुन सुन महर  
हनेगिन गालन गुलचा चार ८३ ॥

सखी बचन श्याम प्रति ॥

माधोजी म्हारे राधाजी को राज ॥ टेक ॥ कीरति  
जूकी परम दुलारी सखियन में शिरताज । सुरसुर  
वाम धाम तजि धावत नेक दरशके काज ॥ तुमसेगवाल  
गुपाल हज्जारन फिरत सहारत साज । बारमिलै नहीं  
रारिमें गोविंद कालि करेसो आज ८४ ॥

श्याम बचन सखी प्रति ॥

तुम्हारी प्यारी राधाजी हमदेखी ॥ टेक ॥ अंगअंग  
ते ठगईसी डारत यौवन मान विशेषी । तुम चतुरन ते  
चतुर चतुर गुण वांचत बात अलेखी ॥ जाके काल  
चले भृकुटिन गति सोसखियनमें सखी । गोविंद भाव-  
नीत्रिभुवन स्वामिनी तुम निजकर कहा पेखी ८५ ॥

चन्द्रावल बचन श्याम प्रति ॥

राधाकूं माधो निज गुणमान करावै ॥ टेक ॥ सो



तोकां तन मन कर चाहत तो बिन कछुन सुहावै । तउन  
बिन इन गालियन डोलत इतर न मन लुभयावै ॥ जो  
कोई जाय कहै इन बातन प्रिया मन रिस न समावै ।  
मोरभवनइतनिकटसुगोबिंद चलोतोकोईनलखावै ८६॥

चन्द्रावल पुनर्वचन ॥

हमारे प्यारे उपवन भवन समारे ॥ टेक ॥ सुवर्णा  
खम्भ जटित मणि रतनन मोतिन बंदनवारे । रुचिर  
अजिर तहां दिव्य सुगंधित वरणा वरणा फुलवारे ॥  
नीर मधुर शीतल शुचि सुन्दर सोहे सरोवर न्यारे ।  
शीतल मंद सुगंधित गोबिंद पवन बहावनप्यारे ८७ ॥

राधा चन्द्रावल सम्बाद ॥

प्रियाम गवन चन्द्रावल संग चहोप्रियामा इतैसखि-  
यन संग आई । गावै परस्पर रहस हरीगुणा गुजरी  
सकुच पुनि मन हरयाई ॥ प्रियाते कहेहस तुमहित  
मोहनरोकेयहांरसवात बनाई । अबदोउ कुंवर मनोहर  
मरति मानो रतीरति राज सुहाई ॥ सरूप सदन हरि  
प्रिया छवि सागर शोभा परस्पर अति अधिकाई ।  
ललिता विसाखाले चम्पलता पुनि चंपक चंपासखी  
जुड़ आई ॥ गावैं बजावैं रिझावैंपरस्पर प्रियाम दर-  
शते महा सुखपाई । यमुना पुलिन तटरमनीय गोबिंद  
सोहे सो रास विलास रुचाई ८८ ॥

सखी बचन सखीसे ॥

लखे सखी प्रियाम कदमकी छैयां ॥ टेक ॥ प्रियामा  
संग विलसत गलवैयां । औचकमें भौचक रहीमजनी



इकटक देखत पल न लगेयां । रतिपति रती मानो बिह-  
रत उपवन इन्द्र शची जानो सुरतक पैयां ॥ सुरकुसुसन  
करहार हरीगल प्रिया उरमणि गगा माल सुहैयां ।  
गोविंद यह छवि कहि न सकत कवि सुर नर मुनि  
मोहित बन गैयां ८९ ॥

सखी वचन सखीसे ॥

सखीरी तेरो कैसे कहां मनखीजो ॥ अमकनकर  
मुख लखत पसीजो लाजनीर चितभीजो । देखतकहुं  
पगधरत पडतकहुं वेगहीआई चलीजो ॥ सोईकहुंआ-  
नवनी सखियनते हमहुं सो अबहीं कहो जो । सरीभटू  
जहां सखियन जुड़ मिल प्रिया मुदमांच रही जो ॥  
प्रयास हूँ बालन संग चलिआये सहजही भेंटभईजो ।  
मुरली हरिकी हरि प्रिया पुनि हरी प्रिया उरमाल  
नसीजो ॥ बहुरि परस्पर मुसामुसी भई पडगई लीजो  
दीजो । हूं गोविन्द प्रिया सखियन तजि भाजी न  
चरचा कीजो ९० ॥

सखी वचन सखीप्रति ॥

रात सखा सपने में देखे यशुमतिमुत वृषभान ल-  
लीरी । वेतो ठाढ़े यमुन पुलिन तट हूं इत निकटतेहा  
निकसीरी ॥ जलधर सजल प्रयास बपु सुन्दर तडित  
छटा प्रिया छवि दरसीरी । पीताम्बर सांवल नीलां-  
वर प्रिया छवि नभ ससकांत दुलीरी ॥ श्रुति कुंडल  
गल कौस्तुभ शोभित शीश मुकुट काटि फेंट कसीरी ।  
कूकतमोर कोकिला किलकत मुरली मधुर धुनि



बिपिन बसीरी ॥ औचक ते भौचक भई सजनी जाग  
पड़ी फिर पलना लगीरी । सो गोविन्द प्रिया छवि  
चितवत चित्तवसी मति विगत भईरी ६१ ॥

सखी वचन सखीप्रति ॥

राधा माधव बिलसत यमुनातीर ॥ टेक ॥ सीरी  
सुगन्धित मन्द समीरु कुसुम सुहावन भीतल नीरु ।  
क्रोडत मोर कोकिला कीरु मुरली सधुरधुनि धुरति  
गँभीरु ॥ सखीसुन मोहनी धुन अतुराई तजितृद्धन  
धन दूधन धाई । निरतत विरत हरीगुण गाई धाये  
तुरातुर ऋषि मुनि धीर ॥ सप्तसुरन त्रयग्राम अलापन  
सुरतिकरि तान मान गति जापन । हाव भाव भावन  
विज्ञापन सखीकर हरीपट हरीकर सखिथनचीर ॥  
सखी नृत कृतकरि कृतकृत भावै प्रियकरि गोविंद  
गोविंद गावै ॥ नभते देव पुठप वरयावै विहरतमुदमन  
सखिथनभीर ६२ ॥ सखी वचन सखीसे ॥

प्रथामजी से प्रीतिलागी कोई जाय कहियो जू ॥  
जैसे प्यारे श्यामाजीके तैसे मेरे रहियोजु । जाकेमन  
लेशलागी पलहु न तुम त्यागोजु ॥ बान जो सदाकी  
कहिये अबहुं निभयोजु । जीवनके जीकी जानो सब  
हीको हेत मानो मोकुं निजदासी चीनो आपनी कहि  
योजु ॥ पहिले चित्त वित्त लीनो फेरना निवाहकीनो  
जैसे मन मेरोमोहो तुमहुं मुहयोजु । गैलमोकुं देखि  
त्याजै मिलंतो बराय भाजै गोविन्दकी ऐसी शोभा  
मेरे मन भैयोजु ६३ ॥



सखी वचन कृष्णप्रति ॥

मोहन मानो वचन हमारो ॥ टेक ॥ राधाजीसों  
बोलत चालत सधुर अलाप उचारो । कोमल हिय  
अति भारीबारी सहत न रोय तिहारो ॥ नेक मलिन  
मन तुमकं देखत बिसरत नींद अहारो । गोविंद उ-  
चित प्रीति अति प्रियाते प्रेमकोभाव विचारो ६४ ॥

कृष्ण वचन ललिता प्रति ॥

ललिता बात सुनो यह मेरो ॥ टेक ॥ प्रिया बिन  
मोकं छिनहुं बनत नाहीं कबहुं न पल बिलगोरी ।  
मोमन प्रिया नित बिलसत प्रियाचित मान गुमान  
भरेरी ॥ हुं तिनको मन हाथन राखत तब उन रास  
रचेरी । भावपरस्पर बिदितसो त्रिभुवन प्रियागोविंद  
भजेरी ६५ ॥ बिसाखावचन प्रियाप्रति ॥

प्रियाकृतिअद्भुतकरतहरी ॥ आजनहींतुमहित बन  
धायो नहींपर प्रगटकरी । निजमन तुमअभिलाषारा-  
खीपर नहीं दृष्टिपरी ॥ तबचित हर्यत पावै जनामन  
मोशिर कृतधरी । गोविन्द शान्त जान अवतो मन  
आवत पल बिसरी ६६ ॥

ललितावचन श्यामप्रति ॥

मोहन मानमेरी कही ॥ टेक ॥ गोपिनहँसैबो हांस  
बो रसमोद सरिता बही । तुमचित्तइतरन भावनासुनि  
लाडिली मनदही ॥ यह दान मान करामनी तुमहुं  
हरीअवगही । राधा गोविन्द मनाय चल कीजै प्रिया  
मनचही ६७ ॥



बिसाखाबचन प्रियाप्रति ॥

राधे चलो ढेरत हरी ॥ रसरहस निशि महारासमें  
रिस नाहीं सोहतकरी । तोमान भयगा भासिनी पर  
सोहै समय अनुसरी ॥ बिनहेत ठिनगन ठानिबो यह  
वानि कबसें परी । गोविन्द नेह विचार चल जानूं  
सो तो मन धरी ६८ ॥

सखीबचन सखीप्रति ॥

जानत कौन प्रयासके मनकी ॥ टेक ॥ सोसबहीके  
मनकी जानो कहेतन अपुन चहनकी । हमरेहियकी  
जानि समारत रहत न बात कहनकी । बरवश  
प्रेम विवश अनुरागो भक्ति लखी सखियनकी ॥ प्रिया  
गोविन्द विदित सो युगल छवि सुखदायक त्रिभुव-  
नकी ६९ ॥

कृष्णबचनराधाप्रति ॥

प्रियाजु सेां बिनती करतकन्हइयां ॥ टेक ॥ चिबुक  
पकड़कर जेअर मनावत प्यारी तिहारीदुहइयां ॥ सो-  
मन एक सो तुम तनलागो इतरन कोन चहइयां ॥  
बोलतलेश विलग नहीं मानोनितप्रति सो नरहइयां ।  
अबगोविन्द प्रिया चलि विलसै निखरोहै कैसेाजुन  
इयां १०० ॥

प्रियामाबचन प्रियामप्रति ॥

प्रियाम तुम जहां बसे तहां जाओ ॥ टेक ॥ अंतर  
इतरन प्रीति निरन्तर हमसेां प्रगट जनाओ । एकही  
मन सोइ सखियन वासो और कहांसेां लाओ ॥ हा-



सन सखिन लभासन हमसें सुन सुन मन अनखाओ ।  
गोविन्द यहां नहिं आवन पैहो निजकृत को फल  
पाओ १०१ ॥

विसाखावचनइयामाप्रति ॥

प्रियाकैसी बिनलीकरतकन्हारै ॥ टेक ॥ करजोरै  
तुमचरणा कुअन चहै सो नहीं उचित सुहारै । प्रयास  
द्वन रसरहस चहन लख अबहुं तजो कपनारै ॥ कृषि  
मचित कठिनारै ह्यागो गहोनिज कोमलतारै । गोवि-  
न्द नेह निहारनहितकहुं अद्भुत युक्तिबनारै १०२ ॥

सखीवचनसखीप्रति ॥

प्रियाकृबि अद्भुतआजबनी ॥ टेक ॥ हरिसँगसखि  
यन यूथ यूथ प्रति विहरत चोप ठनी । चन्द्रावली  
रतीनेहो सनेहोरूपलता रतनी ॥ चदनी मदनी मदनका  
मेहनी चम्पकली रमनी । रास विलास हास रस  
राचत गोविन्दप्रेमसनी १०३ ॥

सखीवचनसखीसे ॥

आज गिरिधारी कुंज बिहारीसंग बिलसत राधा  
प्यारी ॥ यमुना पुलिन तट बासै सखियन मिल रास  
विलासै मुदहास परस्पर हासै कृबि सागर अगम अ-  
पारी ॥ राधा माधोमाधो भावै माधो राधेराधे गावै  
अति प्रीति की रीति सुहावै निरतत कृति न्यारी  
न्यारी । प्रयासगावतसुन्दर गाना प्रयासा धारत कव-  
हुं मानाहरि बिनवत करना बाना दोऊ लीला प्रेम  
प्रचारी ॥ मृद घुरत मृदंग उपंगु सारंगी चंग मोचंगुसने



विहरत रती अनंगु गतिगोविन्द पर बलिहारी १०४ ॥

सखी बचन सखीसे ॥

चलोरी वृन्दावन विहरत प्रयाम ॥ टेक ॥ कदमन  
विपिन सुहावत सोहन कुसुमन बरन गंध मनमोहन  
प्रयामभये सखियन रस गोहन टेरत मुरली में लै लै  
नाम । असरा श्रुती देव बधूअन गिन हरी अवतारन  
शक्ती अनेकन प्रकटकरी जे नर नारायण सोई सब  
आय भई ब्रजवाम ॥ सभी सखी गोलोक विहारनी  
श्रीपुर श्री संगरहै सप्रचारनी रत युत रघुपति रूप  
निहारनी सुरन सिया प्रकटी ब्रजधाम । सिया सखी  
अगाणात इतर अपरमित प्राप्तिभई हरीसंग बिलसन  
हित उमगत उमहत निरतत मुद चित प्रिया संगहरी  
प्रियाहरी अनगाम ॥ बरन बरन पट बसन सुहावै को  
किला बैनी मनोहर भावै मुरली सुरन धुन मिलसखी  
गावै प्रकटत रस उघटत गुण ग्राम । सीपी बासी सुक  
रीकेरी गज मीन महोषट विधि प्रकटेरी मुक्तामाल  
बैजन्ती लसेरी हरि छवि विभुवन मन अभिराम ॥  
कबहुं विरत रस प्रिया अतुरावै प्रेम कोप कर मान  
जनावै हरि विनवै कर जोड मनावै मानो ब्रज विल-  
सत रतियुत काम ॥ गोविन्द हरि प्रिया रास रचायो  
सुर नर नारिन मंगल गायो शरद निशा शशि अति  
उजलायो चन्द्र दुती मानो शीतल घाम १०५ ॥

सखी बचन सखी प्रति ॥

भावै प्रयाम रास रसपावै ॥ कदमन विपिन सुघन



हर यायो । पृष्ठप सुगंधित बन सहकायो ॥ निर्मल  
 दिव्यकान्त शशिछायो । गावैं सखिन समूह सुहावैं ॥  
 यूथयथहरि संग जुडिआई । प्रिया संग न्यारे समूह  
 सुहाई ॥ दोऊ चित चोप लागि अधिकआई । निरतत  
 भिन्न भिन्न गति गावैं ॥ हरीकर सखी निज करन  
 पकरहे । चक्र कृती भ्रमत नृत्यकरहे ॥ मुरलीमिलान  
 मधुर सुर भरहे । रुचिर मनोहर बाद बजावैं ॥  
 कबहुं दुरित हरि प्रिया अकुलावत । दुरित प्रिया  
 तो हरी प्रगटावत ॥ तारी परस्पर दै हरयावत ।  
 गोविन्द प्रिया कृत हास रुचावैं १०६ ॥

गोपी बचन सखीन ते ॥

प्रयास सुन्दर छविआजबनी ॥ मोरमुकुट शिरपवन  
 भ्रंकारत कुण्डल हलन मोदमन बोरत । भृकुटी कुटिल  
 मन मदन मरोरत रूप छवा छवि चोप ठनी ॥ वाम  
 बाहु कृत वाम कपोलो मधुर सुरा वृत्त बैन अमोलो ।  
 पुनि पुनि कुन कुन राव अतोलो मुरली धुनित धुनि  
 प्रेम सनी ॥ गुंज पुंज कुसुमन वनमाला रतनांगद मणि  
 किंकिणि जाला । तडित वसन सांवल नन्दलाला  
 नीलाम्बरप्रिया शशिवदनी ॥ सैन बैन कर चरणा  
 चलावै हाव भाव कृतरुचिर सुहावै । गोविन्द नवीन  
 गुनावली गावै प्रयासप्रिया त्रिभुवन रमनी १०७ ॥

गोपी बचन सखीनसे ॥

प्रिया संग विहरत सखिन हरी ॥ प्रयास प्रेम  
 लखि सखी इतराई । चहत प्रचरजा कृत्यकराई ॥



पग मर्दन कहैं शीश गुहांई । हरी निज लोपन युक्ति  
 करी ॥ १ ॥ श्याम बिना सखी सब अतुराई । तरु  
 पशुपक्षिन पूछति जाई ॥ शशि देखे हरीकहे कहां  
 पाई । भोर सखिन बन भ्रमत फिरी ॥ २ ॥ पुनि  
 गोपिनि प्रिया कूहरी कीने । सखियन रूप सखन  
 धर लीने ॥ जब हरि लीला कति चित दीने ।  
 प्रगटत हरी हरियत सगरी ३ ब्रज बनितन मिल  
 मराडली पारी ॥ बीचमें निरतत हरी प्रियाप्यारी ॥  
 नवकति रत मन बसत मुरारी । गोविन्द गुन गन धुन  
 उचरी ॥ ४ ॥ १०८ ॥

सखी बचन ॥

स० ॥ राजतमोर मुकट शिरसुन्दररूपकीऊपतेनील  
 मणि लाजत । भृकुटी कुटिल छवि चंचल नैन सलोने  
 मृग छोने बिराजत ॥ गोल अमोल सतोल कपोल हैं  
 अरुन अधर बिम्ब फल जिम राजत । सामल गात  
 सुहात गोविन्दकोजैसेभजेमनवैसेहीछाजत १०९ ॥

सखी बचन प्रिया से ॥

टेरतप्यारीसामलिया चलो इतरजनी बीतीजाय ।  
 घेरत मान मलनिया नवल तब तोसं कछू न बसाय ॥  
 रास में हास हास में रोशन पुनि पुनि छवि अधिका  
 य । गोविन्द सखिन समूहन राजत तो बिन कछु न  
 सुहाय ११० ॥

श्याम वचन प्रियाप्रति ॥

करत प्रियासुं प्यारी रसकी बात ॥ टेक ॥ कैसी



उदास हँसोदुग छाई नासालों आई दिखात । अबसोई  
छाँवि अधरन पर पाई सुनत प्रिया मुसकात ॥ देखे  
प्रिया दोउ दुगन मिलावें कौन बिलस पलकात ।  
निरखत हरिकर भूपक मिचावत हारिप्रिया हंस  
जात ॥ करही में निजकर दाव मध्यमा कहत सो  
कोन गहात । चतुराई ते प्रिया गहपावत हरहुं बहुरि  
हरयात ॥ तारागण गिनवोक्त ठानत गिनत गिनत  
विसरात । गोविन्द प्रिया कर पकड़ ले आये काहे  
बितावत रात १११ ॥

सखीवचन सखीसे ॥

चलोरी सखी मोहन राचो रास ॥ टेक ॥ मुरली  
अधर धर प्रियाम बजावत गावत सुर सुखरास । चहुं  
दिशिते उमगी सखी आई उयो उडुगन शशिपास ॥  
सखी अनिगिन मन मोदित निरतत हरि मिल गावें  
सुभास । चौप परस्पर निरतत गावत करत मनोहर  
हास ॥ सुर सुरनारि कुसुम बरयावत पशु पक्षिनतजे  
वास । मुनिन तपोधन त्यागे तपोवन धाये रास दरश  
आस ॥ एक हरी फिर यूथयूथ प्रति दरशत करत  
हुलास । एकएक संग बिहरत गोविन्द जानत को  
गति जास ११२ ॥

चंद्रावलि बचन श्याम प्रति ॥

राधाको माधो निजगुनमान करावे । सोतोको तन  
मनकर चाहत तोबिन कछु न सुहावे ॥ तू उन बिनइन  
गलियन डोलत इतरन मन लुभियावे । जो कोइ जाय



कहे इनबातन प्रिया मनरिस न समावे । मोर भवन  
इत निकट सुगोविंद चलो तो कोई न लखावे ११३ ॥

पुनर बचन चंद्रावली ॥

हमारे प्यारे उपवन भवन सँभारे । सुवर्णा खम्भ  
जटितमणि रत्नमोतिन बंदनवारे ॥ रुचिरअजिर तहाँ  
दिव्यसुगंधित वरणावरणाफुलवारे । निरामधुरशीतल  
शुचिपूरन सोहे सरोवर प्यारे ॥ शीतलमंद सुगंधित  
गोविंद पवनबहावन प्यारे ११४ ॥

प्रियामा प्रियाम समागम सखिनसहित ॥

प्रियाम गवन चंद्रावल संग चहो प्रियामा इतसखियन  
संग आई । गावें परस्पर रहसहरीगुन गुजरी सकुच  
पुनिसन हरवाई ॥ प्यारीतेकह्यो हम तुमहित मोहन  
रोंके यहां रस बात सुनाई । अब दोउ कुंवर मनोहर  
मरति मानो रतीरतराज सुहाई ॥ सरूपसदनहरी  
प्रिया छवि सागर शोभा परस्पर अति अविकाई ।  
ललितविखावाले चपलता पुनचंपादे आदिसखी  
जुड़आई ॥ गावेवजावेरिभावे परस्पर प्रियामदरशाते  
महासुखपाई । यमुना पुलिनतट रमनीय गोविंद सोहे  
सुरास विलास रुचाई ११५ ॥

सखीसे सखी को बचन ॥

लखे सखी प्रियाम कदमकी छैयां ॥ प्रियामा संग  
बिलसत गलवैयां ॥ टेक ॥ औचक में भौचकरहीसजनी  
इकटक देखत पलनलगैयां । रतिपतिरतिमाने विहरत  
उपवन इन्द्र शचीजाने सुरतरुपैयां ॥ सुरकुसुमनकर



हारहरीगल प्रिया उरमनगनमालसुहैयां । गोविंद सह  
 छविकहिन सकतकवि सुरमुनिमोहितवनगैयां ११६ ॥  
 कीरति जूकी परम दुलारी सखियनमें शिरताज । सुर  
 सुर वाम धामतजिधावत नेक दरश के काज ॥ तुमसे  
 गवाल गुपाल हजारन फिरत सहारत साज । वारमि  
 लैतहिं रारमें गोविंद काल करै सो आज ११७ ॥

प्रयाम वचन सखी प्रति ॥

तुम्हारी प्यारी राधाजी हमदेखी ॥ टेक ॥ अंग  
 अंगतेठगई सी डारत जोवन मान विशेषी । तुमचतुर-  
 नते चतुर चतुरगुन बांचत बातअलेखी ॥ जाके काल  
 चलेभूकुटिन गत सो सखियनमेंयेखी । गोविंद भावनी  
 विभुवनस्वामिनी तुम निजकर कहा पेखी ११८  
 दो० भजनकरै तो प्रयामको मननकरै तो प्रयाम ।

रमनकरै तो प्रयाममें प्रयामहिमें विश्राम ११९ ॥  
 छ० श्रीकृष्णाहिसुखधाम प्रयामसुन्दरसबलायक ॥  
 हूं विनऊं करजोर जानि जग संगल दायक ।  
 पायभक्तियुत कुशल सकल परजन सुखरासे ॥  
 मोद तृद्धि सब भांति सकल शुभकृत्य बिलासे ॥  
 प्रयाम कोलि अद्वा सहित पढ़ै सुनै जो जीव ।  
 सकलकुशलसबकृतिसुफलहायभक्तिगुनसीव १२० ॥  
 बिहारी जी म्हारी लाजतुम्हें ॥

सबजन अपनोहित कर राखत तुमबिन कौनहम्हें ।  
 बिहारी जी म्हारी लाजतुम्हें ॥  
 अबकी बार जो सुख नहीं लेहो तो फिर कौन सहें



बिहारी जी म्हारी लाजतुम्हें ॥

फूलत फलत महर तिनके मन अंकर भक्त जम्हें ।

बिहारी जी म्हारी लाज तुम्हें ॥

तुम्होंसदामस सरबस गोविंदतनमनप्रेसरम्हें ॥

बिहारीजी म्हारी लाज तुम्हें १२१ ॥

क० विदितहो सदीव प्रयास करुणाकर सीव नेक  
विनती अनगिनती गिन दीनतहित ठानहो । जगत  
अपार जीव तारे निज गुण विचार करत ना अवार  
नेह जाको उर आनहो ॥ ऐसी हरिवान जान छिन  
छिन गुण करहुं गान कबहुं हरि कानन सुन अपनो  
कर मानहो । गोविन्द श्रीमानी सुखदानो जगजीवन  
के हमहुं पहिंचानैं जो हमहुंको जानहो १२२ ॥

अथ गोविन्दरहस्य गोविन्दसहायकृत प्रथम रहस्य ॥

स० यज्ञ अवश्यपै शक्ति न आपमें धर्मतने अघभय  
हरी धायो । ताही समय निज धामते कृपाहुं मानो  
हतो तहां द्वारते आयो ॥ शोच विनाशके भीमकूं  
हासते औगुण चारले मन्दगिनायो । भोज्यप्रशंसक<sup>१</sup>  
भोजीमहाबद्ध<sup>२</sup> नारीमलिन<sup>३</sup> गृहवासहूगायो<sup>४</sup> १२३ भीम  
सभक्ति संयुक्त चहुंगुण कृपाही माहिं दिखाय जना-  
यो । ऋक्ष सुता बधु<sup>५</sup> सिद्ध वसन<sup>६</sup> भव भोज्य सुपाचक<sup>७</sup>  
भोजक भायो<sup>८</sup> ॥ भक्ति न कस्मि हँसे पुनि भीमकूं ध-  
न्य महाकृत पुराय कहायो । नृपहेतु महामख पुराय  
दियो गुण गोविंद के गनको गिन पायो १२४ ॥

कृपा कहे अनुकम्पित पापते कम्पित जो सुत



धर्म निहारो । क्षत्री न धर्म सुधर्म समर सो तुम्हारो  
 सुयश नृप सुरन सम्हारो ॥ भारी गिनतरणा पापको  
 भारतो धारतहमकर प्रकटपसारो । हरित भीमकहो  
 हरि पाप जो आपकोदे बहे पाप हमारो १२५ कीजो  
 कृपा तो महामख शुभकृत हमकर अपुन प्रताप स-  
 न्हारो । तो तस पुण्य समर्पहे आपको होय अक्षय  
 हम पुण्य प्रचारो ॥ मुदित प्रशंसित भक्ति कहो हरि  
 सुमति वृकोदर दक्ष विचारो । धनधन ते तिन पाप-  
 न गोविंद धारत निजकर जन हितधारो १२६ ॥

निरतत विरत रसातुरो पातुरीरूपरती श्रुति नाद  
 प्रवीनी । सरगम सुरत्रयग्राम अलापन करपगवानी  
 सुरन समकीनी ॥ बादसुरावृतसाधन भूषणाधुननभनक  
 सो भनाभन भीनी । श्याम सुधर छवि निरखी सो  
 योयिता मतगत विगत सरस मन भीनी १२७ गाई जो  
 मोते बनेना सुधर गत मोहन रूप विमोही न चानी ।  
 हरि एक चक्री में चारते क्रीडत करत चकृत कृत  
 चक्र नवीनी ॥ त्रिभुवन कन्दुक हरि बिहरे करत  
 लीला ले सप्त सो नृप भ्रमदीनी । गोविंद भूषण दान  
 दे हरित कीनवरांगना पापनहीनी १२८ ॥

रुक्मिणी सुदमन वचन प्रशंसित द्रौपदी पंच  
 पतिन प्रतिभाखी । पांच पतिन रतसम नहिं सम्भव है  
 सो त्रियन मत परखी पराखी ॥ सक्रविया हो अनेक  
 पुरुषकर निलज लखेना सो कोन समाखी । सेव्य  
 समान सकल कहैं द्रौपदी मोर परम वृत कृष्णाही



प्रयामकेलि ।

४५

साखी १२६ मोपति बिपति बिथित सो तजीपति पंच  
पतिनपति मोपतिराखी । तुम जो सहस्रन सकहरी  
कहोकसन सपहनता अमरस चाखी ॥ जावे रसन सो  
गुमान भरी मन कोई रसरागी कोई अभिलाखी ।  
नारदमुनितेहरी धरेपरा पुनिहारीपै लीनेलखीतुमदा-  
खी ॥ तुमकुं लगे प्रतिबाय अवश्यक तुमहो मर्याद  
की बाटक साखी । ऐसेही गोबिंद बानी बिलासन  
रानी सहस्रन आनंद लाखी १३० ॥

इति प्रयामकेलि समाप्ता ॥

मुंशी नवलकिशोर के छापेखाने मुकाम लखनऊ में छपा  
मार्च सन् १८८६ ई०

इसपुस्तकका हकतसनीफ महफूज है बहक इस छापेखाने के

— 0 —